ता॰ 28.4.2020
डा॰ शिवानन्द मर्ग
दर्शनशास्त्र विभाग
आर॰ एन॰ कॉलेज
पण्डौल

BA (II)

न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धान्त

न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम के दर्शन में तर्कशास्त्र और प्रमाण-शास्त्र पर अत्यधिक जोर दिया गया है। न्याय-दर्शन के समस्त साहित्य को दो भागों 'प्राचीन न्याय' और नव्य-न्याय में विभक्त किया गया है। गौतम का 'न्यायसूत्र' प्राचीन न्याय का तथा गंगेश उपाध्याय का 'तत्वचिंतामणि' प्रमाणिक ग्रन्थ माना जाता है। अन्य भारतीय दार्शनिकों की तरह न्याय का चरम उद्देश्य मोक्ष को अपनाना है। मोक्षानुभूति हेतु न्याय-दर्शन में सोलह (16) पदार्थों की व्याख्या की गई है उनमें प्रमाण पहला है। प्रमाण यथार्थ ज्ञान के साधन को कहा जाता है।

न्याय-दर्शन में ज्ञान का स्वरूप प्रकाशमय माना गया है। इसमें सही ज्ञान को 'प्रमा', मिथ्या ज्ञान को अप्रमा. जो चेतन मनुष्य यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है 'प्रमाता' तथा ज्ञान के विषय को 'प्रमेय' कहा जाता है। ज्ञान के साधन को 'प्रमाण' कहा जाता है। न्याय के मतानुसार प्रमाण चार है- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान।

न्याय दर्शन का पहला प्रमाण, प्रत्यक्ष का अत्याधिक महत्व है। प्रत्यक्ष ज्ञान सन्देह-रहित है। यह यथार्थ और निश्चित होता है। कहा भी गया है, "प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्।" यहाँ प्रत्यक्ष का प्रयोग ज्ञान के साधन के अतिरिक्त साध्य के रूप में यानि प्रमाण तथा प्रमा दोनों अर्थों में हुआ है। प्रत्यक्ष में विषयों का साक्षात्कार हो जाता है। यह स्वतंत्र तथा निरपेक्ष प्रमाण है। इसे अन्य प्रमाणों का प्रमाण कहा जाता है। प्रत्यक्ष के बिना अन्य प्रमाणों से ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। प्रत्यक्ष दो शब्दों प्रति- सामने + अक्ष = आँख से बना है। यानि जो आँखों के सामने है। यह संकुचित अर्थ है। व्यापक अर्थ में प्रत्यक्ष का मतलब वह ज्ञान है जो ज्ञानेन्द्रियों- आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा- से प्राप्त होता है। न्याय-दर्शन

ता 28/5/2020

न्याय के प्रमाण सिद्धान्त

में प्रत्यक्ष की परिभाषा इन शब्दों में दी गई है - "इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानं प्रत्यक्षम्" दूसरे शब्दों में जो ज्ञान इन्द्रिय और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न हो, उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के तीन तत्व हैं - (1) इन्द्रिय (2) विषय (3) सन्निकर्ष। इस प्रकार इन्द्रिय और वस्तु का सम्पर्क ही प्रत्यक्ष है। सर्वप्रथम प्रत्यक्ष का विभाजन दो वर्गों- (1) लौकिक प्रत्यक्ष और (2) अलौकिक प्रत्यक्ष में हुआ है। फिर लौकिक प्रत्यक्ष को दो भेदों- बाह्य और मानस प्रत्यक्ष में विभक्त हुआ है। प्रत्यक्ष का विभाजन एक दूसरे दृष्टिकोण निर्विकल्पक और सविकल्पक के रूप में भी हुआ है। अलौकिक प्रत्यक्ष के भी तीन प्रकार हैं- (1) सामान्य ज्ञान (2) ज्ञान लक्षण (3) योगज। प्रत्यक्ष के सभी वर्गीकरण से भी यह स्पष्ट है कि इन्द्रिय और वस्तु का सम्पर्क ही प्रत्यक्ष है।

अनुमान न्याय दर्शन का दूसरा प्रमाण है। वह ज्ञान प्रत्यक्ष ही है जिसके आधार पर अनुमान अनु-मान यानि बाद के ज्ञान की प्राप्ति होती है। अनुमान वह ज्ञान है जिसमें प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर जाया जाता है। अनुमान अपनी उत्पत्ति के लिए प्रत्यक्ष पर आश्रित है। इसलिए अनुमान को प्रत्यक्षमूलक ज्ञान कहा गया है। अनुमान के तीन अवयव हैं- पक्ष, साध्य और हेतु। पक्ष अनुमान का वह अवयव है जिसके संबंध में अनुमान किया जाता है, पक्ष के संबंध में जो कुछ सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहा जाता है तथा जिसके द्वारा पक्ष में साध्य का होना बतलाया जाता है वह हेतु कहलाता है। अनुमान का उद्देश्य पक्ष और साध्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करना है। इसके लिए आवश्यक है- पक्ष और हेतु का संबंध, और साध्य और हेतु का व्यापक संबंध। हेतु और साध्य के बीच जो संबंध होता है उसे व्याप्ति कहते हैं। अनुमान का आधार व्याप्ति है।

प्रयोजन की दृष्टि से नैयायिकों

Scanned with CamScanner

23-...

न्याय के प्रमाण

ने अनुमान के दो भेद किये हैं- (1) स्वार्थानुमान (2) परार्थानुमान। जब व्यक्ति स्वयं निजी ज्ञान की प्राप्ति के लिए अनुमान करता है तो उसे स्वार्थानुमान कहा जाता है और जब दूसरे के निमित्त किया जाता है तो परार्थानुमान है।

नैयायिकों ने शब्द को भी प्रमाण माना है। किसी विश्वस्त व्यक्ति के कथनानुसार जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द ज्ञान कहते हैं। आप्त पुरुष के उपदेशों को ही शब्द कहा गया है। न्याय सूत्र के अनुसार- 'आप्तोपदेशः शब्दः'। न्याय दर्शन में शब्द को एक स्वतंत्र प्रमाण माना गया है।

न्याय दर्शन में उपमान को भी एक प्रमाण माना गया है। उपमान के द्वारा जिस ज्ञान प्राप्त होती है उसे उपमिति कहते हैं। उपमान हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसके द्वारा वस्तु के समानतापूर्ण (Comparation) का ज्ञान होता है। समानता के आधार पर हम नये विषयों को जान लेते हैं। उपमान के द्वारा नवीन आविष्कारों में भी सहायता मिलती है।